फरीदाबाद
मजदूर समाचार
अनुभवों तथा विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabadmajdoorsamachar.blogspot.in >

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद – 121001

नई सीरीज नम्बर **346** 1/– *अप्रैल* **2017**

"असहाय कहना , उज्जवलता के डर से आता है।"

ताऊ , बड़े थके हुये लग रहे हो।

एक तो गर्मी और ऊपर से बहुत सियापा भी सुना।

आप तनखा बढवा दो।

ताकत आप में है। हम कहाँ से बढवा देंगे !

ताऊ , हम बोलेंगे तो दँगा हो जायेगा।

अरे ! तुम्हें दँगे से क्या डर ?

क्या बात कर रहे हो।हमें डर कहाँ।डर तो ऊपर से नीचे तक है।पत्रकारों तक फैल गया है।सब डरे हैं।

भाई , आपका संकेत किस तरफ है ? थोड़ा समझ में नहीं आ रहा।

बोलेंगे तो आप काँप जाओगे।

हा-हा-हा ! अरे अभी ठण्ड थोड़ी न है कि काँपने लगेंगे।

बात तो सही है।हम यह कह रहे हैं आप से और अपने इन साथियों से भी कि सारा एक्शन तो हम करते हैं और रियेक्शन वाले बहुत बोलते हैं। और बोलते-बोलते यहाँ पहुँच जाते हैं कि हमें ही कमजोर , असहाय दिखाने लगते हैं। इसलिये जब हम बोलते हैं तब कम्पन आ जाती है। क्योंकि असहाय दिखते नहीं हैं फिर।

ताऊ , आपको कल की बात सुनाता हूँ। हमारा एक साथी एच आर के पास गया।बोला तनखा का हिसाब समझा दो जरा। एच आर की क्रुर बुद्धि ले गई उसे ठेकेदार के पास हिसाब करवाने।चाय का समय था।उसने फोन किया, बात फैल गई। काम बन्द। सब एच आर के पास। हवा टाइट। कुछ दिन चलेगा। दूसरी शिफ्ट को भी पता चल गया है।

इस तरह के ट्रिगर हर वक्त दबते रहते हैं। तूफान का धीरे-धीरे बढना चलता रहता है।जैसे कि जलवायु का अप्रत्याशित , तरंगी परिवर्तन।

सुना है कि आजकल का शोध यह कह रहा है कि छोटे-छोटे उबाल कई ढँग से जुड़ कर झंझावाती माहौल में सब को लपेट लेते हैं।

लपेटे में तो सभी आयेंगे। सवाल है कि क्या चमक लिये , क्या उज्जवलता लिये टकरायेंगे।

यह बात सुनने में अच्छी लग रही है पर पूरी तरह समझ नहीं आ रही।

ताऊ , देखो आप ।दो-तीन दिन पहले की बात है , एक रोबोट ने एक वरकर के सिर में मार दी चोट।एक इन्च का घाव हो गया।नौकरी भी गई। उस फैक्ट्री में 100 के करीब रोबोट हैं। चलते रहते हैं। हम थक जाते हैं। हमें तो रैस्ट चाहिये और अर्थ तथा व्याख्या , स्पष्टीकरण भी चाहियें।

तो आपका यह कहना है कि हम झमेले लिये हैं और रोबोट इन झमेलों से मैनेजमेन्टों को मुक्त करने का आकर्षण लिये हैं।

आकर्षण तो हमारे लिये भी है , पर उस आकषर्ण का अभी वो वर्णन नहीं मिला। अभी डर और शंका में ही बात चल रही है। मेरा कहना यह है कि हमारे देखते-देखते शायद श्रम निर्भर जीवन का अर्थ बदल जायेगा।

हाँ , ये कहा जा रहा है कि काम के लुप्त होने के समय के दौरान में हैं हम। और इस अवधि में क्या उज्जवल सोच , क्रिया , रचना उभारेंगे हम वही चुनौती है , वही महत्वपूर्ण है।

पिछले कई वर्षों से यह उज्जवलता आती है , उसकी चमक दिखती है , फिर छोटे-से अन्तराल में रह कर भूमिगत हो जाती है।

जो उज्जवलता से डर जाते हैं वो उसके होने को ही नकारते हैं।

ताऊ , अब समझो। असहाय कहना डर से आता है। उज्जवलता के डर से आता है।

कई बातें कईयों में बातचीतों में

मार्च माह में फरीदाबाद में अनमोल ऑटो इलेक्ट्रिक , शाही एक्सपोर्ट , फ्रिक इण्डिया , के आर रबराइट , ब्ल्यू स्टैम्पिंग , ओरियन्ट इलेक्ट्रिक , जे सी बी , कटलर हैमर , लखानी शूज, हिन्दुस्तान सिरिंज आदि फैक्ट्रियों के मजदूरों से बातें हुई। इस दौरान उद्योग विहार गुड़गाँव में हरसोरिया हैल्थकेयर , ऋचा ग्लोबल , कैलाश रिबन , एशियन हैण्डीक्राफ्ट , चिन्टू क्रियेशन , लोगवैल फोर्ज , अर्जुन ऑटो , माइक फिल्टर , चॉयस , एम डी एच मसाले, गौरव इन्टरनेशनल , ओरचिड ओवरसीज , कौटिल्य एक्सपोर्ट , मोडलामा , रादनिक , पर्ल ग्लोबल , वैम हाईफैशन , रांगी इन्टरनेशनल आदि फैक्ट्रियों के मजदूरों से बातें हुई। आई एम टी मानेसर में मार्च माह के दौरान सिग्मा मोल्डिंग , ग्रोवर सन्स , डिगानिया मेडिकल , इण्डो ऑटोटेक , एस वी प्रिसीजन कम्पोनेन्ट्स , जे बी एम , वीएक्सेस , जे एन एस , हुबरसुन्नर , एफ एम आई ऑटोमोटिव , ज्योति एपरेल्स आदि फैक्ट्रियों के मजदूरों से बातें हुई। दिल्ली मजदूरों से बातें नये ग्रेड से आरम्भ हो कर फैली। मार्च माह में स्विफ्ट , ग्रुप फोर , एस आई एस , सेन्टिनल , एच एम एस आदि सेक्युरिटी सर्विसेज के गार्डों से बातें हुई। बातें एक के-कई के साथ मजदूर समाचार के वितरण के दौरान , बातचीत के लिये तय दिनों के समय , मजदूर लाइब्रेरी में आमने-सामने हुई। इधर व्हाट्सएप पर आदान-प्रदान बढे हैं। जगह कम के कारण इस बार हम बहुत थोड़ी बातें दे पा रहे हैं।

आरम्भ में स्पष्ट कर दें कि दिल्ली में नये ग्रेड 3 मार्च 2017 से लागु हैं। ***जे एन एस*** (4 सैक्टर-3 , आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में भोजन के बाद बोतल में पानी भरने लगी एक लड़की को लाइन पर पहुँचने में दो मिनट की देरी हो गई। दो लाइन लीडरों ने उसे बुरी तरह डाँटा , लाइन से हटा दिया, कहा कि छुट्टी के बाद रुक कर एक्स्ट्रा काम करके जाओगी। लड़की ने मना किया तो एक लाइन लीडर उसे नीचे एच आर डिपार्ट में ले जाने लगी। ठीक है , चलो बोली लड़की तो लाइन लीडर ने उसे धक्का मारा। वो गिर गई , ऑपरेटर उसके पास एकत्र हुये तो लाइन लीडर बोली कि नाटक कर रही है। उसका पैर फ्रैक्चर हो गया है जान कर सब ऑपरेटरों को बहुत दुख हुआ। इस पर सीनियर स्टाफ कुछ नहीं बोला है। ***शाही एक्सपोर्ट*** (15/1 मथुरा रोड़ , फरीदाबाद) फैक्ट्री में कार्यरत 4000 वरकरों में 85 प्रतिशत महिला मजदूर हैं और कम्पनी ने एक बस का भी प्रबन्ध नहीं किया है। स्वयं मन्थली ऑटो का प्रबन्ध करती महिला एक ऑटो में 17-20-22 ठूँसी हुई आती-जाती हैं। एक्सीडेन्ट होते रहते हैं , महिला मजदूर घायल होती रहती हैं। ***हरसोरिया हैल्थकेयर*** (110-111 उद्योग विहार फेज-4 , गुड़गाँव) फैक्ट्री में 250 परमानेन्ट मजदूरों को दिसम्बर-जनवरी-फरवरी में किये ओवर टाइम के पैसे यह कह कर मार्च-अन्त तक नहीं दिये हैं कि कम्पनी के पास पैसे नहीं हैं। चार ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 1000 मजदूरों में से कुछ को फरवरी की तनखा 20 मार्च को दी और कुछ को 29 मार्च तक नहीं दी थी। ***डिगानिया मेडिकल डिवाइसेज*** (251 , 275 सैक्टर- 6 , आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 7 मार्च को एक टेम्परेरी वरकर ने एच आर हैड से तनखा और ओवर टाइम समझाने को कहा तो साहब ने ठेकेदार के पास ले जा कर रिजाइन लिखवाने को कहा। तब बन्दे ने साथियों को फोन किया। सब टेम्परेरी वरकर इक्ट्ठे हो कर एच आर विभाग में। फिर सब फैक्ट्री के बाहर। उम्पादन बन्द। प्लॉट 275 में 10 टेम्परेरी के बीच एक परमानेन्ट मजदूर है। फिर 8 मार्च को सुबह की शिफ्ट में टेम्परेरी वरकर फैक्ट्री के अन्दर नहीं गये। ***फ्रिक इण्डिया*** (एन एच पी एसी चौक , फरीदाबाद) फैक्ट्री में 30-40 परमानेन्ट मजदूर और 550 टेम्परेरी वरकर। सौ-सवा सौ हैल्परों को तीन महीने बाद ब्रेक और फिर उन्हीं को तीन महीने नहीं रखते। चार सौ से ज्यादा कारीगरों को 6 महीने , फिर 6 महीने , फिर एक-एक साल रखने का सिलसिला। ***रांगी इन्टरनेशनल*** (98 उद्योग विहार फेज-1 , गुड़गाँव) फैक्ट्री में महिला मजदूरों ने 29 मार्च को सुबह 9 बजे फिर काम शुरू नहीं किया। एक घण्टे में आश्वासन कि साँय तक बैंक से पैसे पहुँचने का मैसेज आ जायेगा। होली से पहले पीस रेट टेलरों और फिनिशिंग वरकरों ने तीन दिन काम बन्द किया तब कम्पनी ने एक-एक हजार रुपये नकद दिये थे। दिसम्बर की तनखा होली बाद खातों में पहुँची थी। ***इण्डो ऑटोटेक*** (132 सैक्टर-8 , आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 100 से ज्यादा रोबोट वेल्डिंग में हैं और कम्पनी घाटे में जा रही है कह कर स्टाफ के एक दिन के पैसे काटे। स्टाफ ने कटवाये हैं कह कर 12 , 13 , 14 फरवरी के तीन दिन के पैसे मजदूरों के काट लिये। फरवरी में रोबोट ने एक मजदूर के सिर में मारा। इमरजैन्सी में ई एस आई अस्पताल ले गये। ऊपर सिर में करीब एक इन्च का सुराख। फिर उस वरकर को निकाल दिया। दिल्ली में ***जी4 एस गार्डों*** की शिकायत पर पी एफ संगठन ने जाँच कर ग्रुप फोर को दोषी पाया , कम्पनी अपील में गई , अपील खारिज करते ग्रुप फोर कम्पनी को गार्डों के खातों में 300 करोड़ रुपये जमा करने के आदेश दिये गये हैं। दिल्ली , उद्योग विहार गुड़गाँव , आई एम टी मानेसर में ***ऋचा-गौरव समूह*** की फैक्ट्रियों में नवम्बर 2015 से मजदूरों की पी एफ राशि न्यूनतम से भी कम तनखा पर जमा कर घोटाला किया जा रहा है। ***वीएक्सेस*** (12 सैक्टर-5 , आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में मजदूरों के लिये पीने का पानी बहुत खराब और पी एफ में बहुत हेराफेरी। टेम्परेरी वरकरों के पी एफ में बहुत गड़बड़ी की बातें दिल्ली और इर्द-गिर्द के क्षेत्रों में बहुत ज्यादा हैं। ***के आर रबराइट*** (24 सैक्टर-6 , फरीदाबाद) फैक्ट्री में भर्ती के लिये इन्टरव्यू में कुछ और सैलरी बताते हैं पर जब काम करते कुछ समय हो जाता है तब नाम ठेकेदार कम्पनी के खाते में डाल कर तनखा बहुत कम देते हैं। ***एफ एम आई ऑटोमोटिव*** (आई एम टी मानेसर में मारुति गेट नम्बर 4 के अन्दर) फैक्ट्री में 200 परमानेन्ट मजदूर और ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे 800 वरकरों को ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से देते थे, मजदूरों ने लड़ कर अब फरवरी से दुगुनी दर से करवाये हैं। ***चिन्टू क्रियेशन*** (295 उद्योग विहार फेज-2 , गुड़गाँव) फैक्ट्री में कार्यरत करीब 1500 मजदूरों का महीने में 100-150 घण्टे ओवर टाइम लेकिन पे-स्लिप में 14-18 घण्टे ही दिखाते हैं। पे-स्लिप में दिखाये घण्टों के पैसे दुगुनी दर से बैंक खाते में भेजते हैं पर बाकी घण्टों के पैसे जब नकद देते हैं तब उनमें से काट लेते हैं , ओवर टाइम के सब घण्टों का भुगतान सिंगल रेट से। ***ब्ल्यू स्टैम्पिंग*** (21 सैक्टर-58 , फरीदाबाद) फैक्ट्री में तनखा हर महीने देरी से , चैक 20 तारीख को देंगे पर उस पर तारीख 7 होगी। ***होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर*** (1-2 सैक्टर-3 , आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में वर्षों से सीधे-सीधे प्रोडक्शन कार्य करते ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे मजदूरों को निकालने के लिये होण्डा कम्पनी इधर नई ठेकेदार कम्पनी को लाने की फिराक में बताते हैं। फैक्ट्री के परमानेन्ट लोगों के लिये फाउंडेशन पार्टी कादरपुर में , 100-150 बसों के लिये जगह साफ करने के लिये मालियों से ओवर टाइम करवाया दो दिन। फिर , ठेकेदार पैसे नहीं दे रहा कह कर 100-100 रुपये लिये तब 375-375 रुपये दिये। बहुत काम है , 16 माली हैं , होण्डा फैक्ट्री में तीन कैन्टीन हैं , माली कैन्टीन में चाय भी नहीं पी सकते — एतराज पर कहते हैं कि जापानी ने मना किया है। उद्योग विहार गुड़गाँव फैक्ट्रियों में काम करते काफी मजदूर ***कापसहेड़ा , दिल्ली*** में किराये के कमरों में रहते हैं। मकानमालिक की दुकान से ही राशन खरीदो , मकानमालिक से ही गैस भरवाओ , किरायेदारों से मकानमालिक एक यूनिट बिजली के 10 रुपये के हिसाब से पैसे लेते है , पानी की टूटी हर कमरे की अलग और उस पर ताला क्योंकि मकानमालिक पानी के पैसे लेते हैं। यह सब दिल्ली में।

हरियाणा सरकार द्वारा 1 जनवरी 2017 से निर्धारित न्यूनतम वेतन :

अकुशल श्रमिक 8280 रुपये मासिक (8 घण्टे के 318 रुपये)
कुशल ब 10,065 रुपये मासिक (8 घण्टे के 387 रुपये)
उच्च कुशल श्रमिक 10,568 रुपये मासिक (8 घण्टे के 406 रुपये)

दिल्ली सरकार द्वारा 3 मार्च 2017 से निर्धारित न्यूनतम वेतन :

अकुशल श्रमिक 13,350 रुपये मासिक (8 घण्टे के 513 रुपये);
अर्ध-कुशल श्रमिक 14,698 रुपये मासिक (8 घण्टे के 565 रुपये);
कुशल श्रमिक 16,182 रुपये मासिक (8 घण्टे के 622 रुपये)।

सजा का बज चुका बाजा .... (पेज चार का शेष)

के दौरान 18-20 वर्ष आयु के 2400 निडर मजदूरों ने मैनेजमेन्ट तथा सरकार की नाक में दम किया।

खानापूर्ति-खानापूर्ति-खानापूर्ति

ऐसे में मजदूरों के दायरे से हटने के बाद मारुति सुजुकी मानेसर के जेल में बन्द मजदूरों का मामला खानापूर्तियों का एक सिलसिला बना , जो अब भी जारी है। असंगत बन चुके कानूनों के इस दौर में विधान-संविधान-कानून का दायरा स्वाभाविक तौर पर खानापूर्ति का है। पुलिस की जाँच (लचर जाँच) , गवाह (लचर गवाह) , गवाही (लचर गवाही) , कम्पनी के वकील , सरकार के वकील , जिला जज, हाई कोर्ट जज , सुप्रीम कोर्ट जज , बचाव पक्ष के वकील , पक्ष-विपक्ष के पत्रकार , कम्पनी अधिकारी , सरकारी अधिकारी , एक्टिविस्ट , क्रान्तिकारी ग्रुप , यूनियन लीडर अपनी-अपनी खानापूर्ति करते रहे हैं। सजा भी एक खानापूर्ति क्योंकि सजा का बाजा बज चुका है। खानापूर्ति में जुटे लोगों के लिये अँग्रेजी में एक सटीक मुहावरा है going through the motions.

दोषी ठहराये जाने पर यूनियन लीडरों द्वारा फैक्ट्री कैन्टीनों में एक-दो दिन भोजन के बहिष्कार की घोषणा। सजा सुनाने के बाद मारुति सुजुकी समूह की फक्ट्रियों में एक घण्टे टूल डाउन। सण्डे संघर्षों से आश्वस्त-सी हो चुकी सरकार द्वारा 23 मार्च को आई एम टी मानेसर में यूनियनों को सभा करने देना। आई एम टी और आसपास के औद्योगिक क्षेत्रों की 40 यूनियनों द्वारा फैक्ट्रियों में ए शिफ्ट की समाप्ति के बाद की गई इस सभा में पाँच-सात हजार की उपस्थिति थी। इतने लोगों को देख कर गदगद यूनियन लीडरों द्वारा भाषणों में हाई कोर्ट जाने की बात। वहाँ उपस्थित एक साथी ने इसे चन्दा मीटिंग कहा। आज फैक्ट्रियों में 80-90 प्रतिशत मजदूर टेम्परेरी हैं और इस सभा में नब्बे परसैन्ट लोग परमानेन्ट मजदूर थे। कानून अनुसार परमानेन्ट मजदूर ही फैक्ट्री यूनियन के सदस्य बन सकते हैं। कानून अनुसार टेम्परेरी वरकर फैक्ट्री यूनियन के मेम्बर नहीं बन सकते। फिर 4 अप्रैल को भारत-व्यापी विरोध प्रदर्शन और अन्य देशों में रिहाई की माँग करने वाले दिन गुड़गाँव में लीडरों ने डी सी के माध्यम से राष्ट्रपति को सजा माफ करने का ज्ञापन भेजा।

सिर्फ प्यार ही दे सकते हैं

अस्सी वर्षीय क्रान्तिकारी कोलकाता से गुड़गाँव आये। उनकी मान्यता है कि क्रान्ति को गति देने के लिये लड़ाकू यूनियनों की एकजुटता महत्वपूर्ण है। मारुति सुजुकी मानेसर यूनियन आज एक प्रतीक है लड़ाकू यूनियन का। बुजुर्ग से मिलने मारुति सुजुकी मानेसर यूनियन के दो लीडर आये। बातचीत में बुजुर्ग अन्धी गली , बन्द गली में से निकलने की कोशिशें करते लगे। मारुति सुजुकी मानेसर में 2011-2012 में जीवन्त गतिविधियों में शामिल रहे उन युवा लीडरों ने बार-बार कहा कि काफी कुछ बदल गया है और अब टेम्परेरी वरकरों को वे सिर्फ प्यार ही दे सकते हैं।

यह प्यार भी देख लें। मैनेजमेन्ट-यूनियन तीन वर्षीय समझौते में 2012 में मारुति सुजुकी मानेसर फैक्ट्री के परमानेन्ट मजदूरों की तनखा में 18800 रुपये की वृद्धि की गई थी। फिर सितम्बर 2015 में हुये तीन वर्षीय समझौते में परमानेन्ट मजदूरों की तनखा में 16000 रुपये की वृद्धि। मारुति सुजुकी मानेसर फैक्ट्री के युवा परमानेन्ट मजदूरों की तनखा पचास-साठ हजार रुपये के दायरे में है। सितम्बर 2015 में हुये समझौते से मारुति मैनेजमेन्ट इतनी प्रसन्न हुई कि उसने प्रत्येक परमानेन्ट मजदूर को तीन हजार रुपये उपहार में दिये। और , यूनियन लीडरों द्वारा समझौता सुनाने के अगले दिन , 26 सितम्बर को सुबह साढे छह बजे की शिफ्ट में 400 टेम्परेरी वर्कमैन मैनेजमेन्ट-यूनियन समझौते के विरोध में मानेसर फैक्ट्री के अन्दर नहीं गये (टेम्परेरी वर्कमैन , टी डब्लू , जुलाई 2012 के बाद 7 महीने के लिये कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती किये जाते मजदूर हैं और यह ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे मजदूरों के अलावा हैं)। टी डब्लू के बी-शिफ्ट के साथी भी फैक्ट्री गेट पर पहुँच गये। मारुति सुजुकी कम्पनी द्वारा गोद लिये 14 गाँवों के कुछ बन्दे तत्काल वाहनों से फैक्ट्री पहुँचे और बाहर एकत्र मजदूरों से भिड़ गये। पुलिस का हस्तक्षेप। फैक्ट्री के अन्दर लड़ाकू यूनियन ने उत्पादन जारी रखने में मैनेजमेन्ट का सहयोग किया। कम्पनी ने ए-शिफ्ट में सामान्य उत्पादन वाला बयान दिया जबकि टेम्परेरी वर्कमैन के बाहर रहने से ए-शिफ्ट में तीन असेम्बली लाइनों पर 1440 वाहनों की बजाय 781 वाहन ही बने , लाइनें एक-एक कर चली थी। ■

साझेदारी

✶ मजदूर समाचार की 15-16-17 हजार प्रतियाँ छापते हैं। आई एम टी मानेसर, उद्योग विहार गुड़गाँव, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फरीदाबाद में मजदूर समाचार का वितरण हर महीने होता है। दिल्ली के इर्द-गिर्द के औद्योगिक क्षेत्रों में मजदूर समाचार की बीस हजार प्रतियाँ प्रतिमाह आवश्यक लगती हैं। बाँटने में अधिक लोगों की साझेदारी के बिना यह नहीं हो सकेगा। सहकर्मियों-पड़ोसियों-मित्रों-साथियों को देने के लिये 10-20-50 प्रतियाँ हर महीने लीजिये और मजदूर समाचार के वितरण में साझेदार बनिये।

✶ मजदूर समाचार के वितरण के दौरान फुरसत से बातचीत मुश्किल रहती है। इसलिये मिलने-बातचीत के लिये पहले ही सूचना देने का सिलसिला आरम्भ किया है। चाहें तो अपनी बातें लिख कर ला सकते हैं, चाहें तो समय निकाल कर बात कर सकते हैं, चाहें तो दोनों कर सकते हैं।

— शुक्रवार, 28 अप्रैल को सुबह 6 बजे से 9½ तक आई एम टी मानेसर में सैक्टर-3 में बिजली सब-स्टेशन के पास मिलेंगे। खोह गाँव की तरफ से आई एम टी में प्रवेश करते ही यह स्थान है। जे एन एस फैक्ट्री पर कट वाला रोड़ वहाँ गया है।

— उद्योग विहार, गुड़गाँव में फेज -1 में पीर बाबा रोड़ पर वोडाफोन बिल्डिंग के पास वीरवार, 27 अप्रैल को सुबह 7 से 10 बजे तक बातचीत के लिये रहेंगे। यह जगह पेड़ के नीचे चाय की दुकान के सामने है।

— शनिवार, 29 अप्रैल को सुबह 7 से 10 बजे तक चर्चा के लिये ओखला-सरिता विहार रेलवे क्रॉसिंग (साइडिंग) पर उपलब्ध रहेंगे।

✶ फरीदाबाद में अप्रैल में हर रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुए रास्ता है। ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

फोन नम्बर : 0129-6567014

व्हाट्सएप के लिये नम्बर : 9643246782

ई-मेल < majdoorsamachartalmel@gmail.com >

कुछ इमेल पते

मुख्य मन्त्री, हरियाणा	< cm@hry.nic.in>
श्रम आयुक्त, हरियाणा	< labour@hry.nic.in>
मुख्य मन्त्री, दिल्ली	< cmdelhi@nic.in>
श्रम विभाग दिल्ली	< labjlc2.delhi@nic.in >
ई एस आई महानिदेशक	< dir-gen@esic.nic.in >
केन्द्रीय भविष्यनिधि आयुक्त	< cpfc@epfindia.gov.in >
चीफ विजिलैन्स पी एफ	< cvo@epfindia.gov.in >

सजा का बज चुका बाजा

रविवार , 12 मार्च को मजदूर लाइब्रेरी में काठमाण्डु , मुरैना , दिल्ली , गुड़गाँव के आठ-दस मित्रों/साथियों के साथ बातचीतों में 10 मार्च को ***मारुति सुजुकी मानेसर केस*** में गुड़गाँव न्यायालय के निर्णय पर भी चर्चा हुई। फिर 16-17 मार्च को होण्डा मानेसर और मारुति गुड़गाँव फैक्ट्रियों के टेम्परेरी वरकरों से इस सन्दर्भ में कुछ बातें हुई। जज द्वारा 18 मार्च को 13 मजदूरों को आजीवन कारावास की सजा सुनाने के बाद गुड़गाँव-दिल्ली-कोलकाता-अमरीका में मित्रों/साथियों से और भी बातें हुई हैं।

अप्रेन्टिस , ट्रेनी , ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे मजदूर, और परमानेन्ट मजदूरों के बीच मारुति सुजुकी मानेसर फैक्ट्री में जून 2011 से घनिष्ठता बहुत तेजी से बढी। कन्ट्रोल पुनः स्थापित करने के लिये कम्पनी और सरकार ने एक के बाद दूसरी रियायत भी मजदूरों को दी। रियायतों के बावजूद , 18 जुलाई 2012 को साँय ए तथा बी शिफ्ट के 4000 मजदूरों ने बिना किसी अचानक गुस्से-आवेश-उत्तेजना के मजदूरी-प्रथा के दो प्रतीकों : मैनेजरों और फैक्ट्री बिल्डिंगों पर आक्रमण किया। कोई भी व्यक्ति मजदूर हो ही क्यों ? मजदूरी-प्रथा की समाप्ति के लिये इस दस्तक द्वारा उत्पन्न उज्जवलता की चमक विश्व-भर में पहुँची। इस उज्जवलता के इन्डस्ट्रीयल मॉडल टाउन मानेसर की हजारों फैक्ट्रियों से होते हुये इर्द-गिर्द के औद्योगिक क्षेत्रों में फैलने की सम्भावना उभरी थी। पर यह हो नहीं पाया।

ऐसे में :

●उज्जवलता से डरी सरकार ने तत्काल 600 पुलिस कमाण्डो आई एम टी मानेसर में तैनात किये और 147 मजदूर गिरफ्तार किये। पुलिस कमाण्डो 2017 में भी वहाँ हैं।

●उज्जवलता से डरी मारुति सुजुकी कम्पनी के चेयरमैन ने इसे वर्ग युद्ध (class war) कहा। मानेसर फैक्ट्री मैनेजमेन्ट ने 546 परमानेन्ट मजदूरों को निकाला और अप्रेन्टिस-ट्रेनी-ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 3000 को बाहर किया।

●उज्जवलता से डरी केन्द्रीय ट्रेड यूनियनों ने मजदूरों के हाथों से निकालने , मजदूरों के दायरे से निकालने के लिये तत्काल 16 यनियन लीडरों की समिति बना कर मामला गुड़गाँव में अधिकारियों-मन्त्रियों को आवेदन-ज्ञापन देने , धरना-प्रदर्शन-भूख हड़ताल का बनाया। टेम्परेरी वरकर इस समिति के फेर में नये आये पर निकाले गये 546 परमानेन्ट और जेल में बन्द 147 के परिवार तथा साथी/मित्र 16 यूनियन लीडरों की समिति के बन्धुआ-से हो गये। छह महीने में उस समिति का दाह-संस्कार हो गया पर तब उग्र भाषा वाले लोग धरना-भूख हड़ताल को 200 किलोमीटर दूर ग्रामीण परिवेश वाले कैथल ले गये। वर्ष पूरा होने पर 19-23 क्रान्तिकारी संगठनों की छत्रछाया में पुलिस अनुमति से 18 जुलाई 2013 को लेजर वैली पार्क गुड़गाँव में मृत एच आर मैनेजर की तस्वीर उठा कर , यूनियन का रजिस्ट्रेशन करवाने वे चण्डीगढ गये थे इसलिये उन्हें मजदूर-पक्षधर घोषित करते हुये , दिन में जलती मोमबत्तियाँ ले कर गम्भीर चेहरों के साथ बिचौलियों का एक प्रहसन समाप्त हुआ।

●उज्जवलता से डरे एक्टिविस्टों और क्रान्तिकारी ग्रुपों ने मजदूरों द्वारा उत्पन्न उज्जवलता को ही नकार दिया। इन लोगों के लिये मजदूर असहाय हैं , बेचारे हैं और मजदूरों द्वारा क्रिया जैसी कोई चीज नहीं होती। एक्टिविस्टों और क्रान्तिकारी ग्रुपों के अनुसार मजदूरों की दैनिक समस्यायें सुलझाने के लिये भी अन्य का निदेर्शन जरूरी है। यह लोग मजदूरों को मात्र प्रतिक्रिया देने वालों के तौर पर देखते हैं। प्रतिक्रिया देने में सिद्धस्त एक्टिविस्टों और क्रान्तिकारी ग्रुपों के लिये सरकार-कम्पनी-पूँजी क्रिया करती हैं , act करती हैं और जनता-मजदूर प्रतिक्रिया करते हैं , react करते हैं। इसलिये एक्टिविस्टों और क्रान्तिकारी ग्रुपों ने 18 जुलाई 2012 के लिये भी कहानी गढी : मारुति सुजुकी कम्पनी ने षडयन्त्र किया , 200 बाउन्सरों से हमला करवाया , प्रतिक्रिया में मजदूरों ने अपना बचाव किया , ऐसे में दुखद घटना हुई।

●उज्जवलता से उदारवादी बहुत डरते हैं। ऊँच-नीच को बनाये रखने के लिये उदारवादी लोग इसलिये बेचारे मजदूरों , असहाय किसानों , दयनीय गरीबों के लिये कुछ करना चाहते हैं। और, अपने हितों के प्रति सदैव चौकस उदारवादी इस कुछ करने के दौरान भी अपने निजी हितों को खूब साधते हैं। इसके लिये एक्टिविस्टों और क्रान्तिकारी ग्रुपों द्वारा गढी कहानियाँ उदारवादियों के माफिक बैठती हैं। मारुति मानेसर के बारे में कम्पनी और सरकार द्वारा गढी कहानी के खिलाफ एक्टिविस्टों तथा क्रान्तिकारी ग्रुपों द्वारा गढी कहानी को उदारवादी पत्रकारों व उदारवादी वकीलों ने हाथोंहाथ लिया। और , दिन में जलती मोमबत्ती तथा मजदूर-पक्षधर एच आर मैनेजर वाले पाखण्ड की अगली कड़ी कोर्ट-कचहरी बने।

दहशत में मैनेजर

18 जुलाई 2012 को मारुति सुजुकी मानेसर में मजदूरों द्वारा उत्पन्न की उज्जवलता से फरीदाबाद स्थित फैक्ट्रियों में मैनेजर डरे दिखे। यहाँ कम्पनी साहबों के संग-संग जापान , अमरीका , यूरोप में कम्पनियों के चेयरमैन-एम डी-सी ई ओ के मन-मस्तिष्क से उज्जवलता के डर को हटाने पर सहमति भारत सरकार के हर अंग में थी। ऐसा करने के लिये मजदूरों में दहशत फैलाना शास्त्र सम्मत है। जिला अदालत , हाई कोर्ट , सुप्रीम कोर्ट जजों द्वारा 147 गिरफ्तार मजदूरों को तीन वर्ष तक जमानत नहीं देना इसकी एक अभिव्यक्ति थी। शस्त्रधारी कमाण्डो तो थे ही। और , शास्त्रधारी बिचौलिये अपने नाटक-नौटंकियों-लेखों-भाषणों-पर्चे-पोस्टरों द्वारा मजदूरों में दहशत फैलाने की पूरक भूमिका में रहे।

मिसाल बने सजा , exemplary punishment के बुलबुले में फरवरी 2013 में नोएडा में मजदूरों ने पिन चुभा दी थी और अगले दिन ओखला औद्योगिक क्षेत्र के मजदूरों ने तो इसका बाजा ही बजा दिया था। अटूट रहा है यह सिलसिला। फैलता जा रहा है। जहाँ 600 कमाण्डो तैनात हैं उस आई एम टी मानेसर में ही इस दौरान मुंजाल किरियु , ऑटो लिव , जे एन एस , बैक्सटर , नपीनो ऑटो , अस्ती इलेक्ट्रोनिक्स , जय उशिन आदि-आदि फैक्ट्रियों में पुरुष और स्त्री मजदूरों की निडरता देखते बनी है। पलवल जिले के पृथला-बघोला औद्योगिक क्षेत्र के मजदूर हों चाहे फरीदाबाद में ध्रुव ग्लोबल और लखानी वरदान ग्रुप फैक्ट्रियों के मजदूर। उद्योग विहार गुड़गाँव में फरवरी 2015 में मजदूरों से डर कर मैनेजर और डायरेक्टर फैक्ट्रियाँ छोड़ कर भागे थे। बिचौलियों को ठोकर मार कर भगाती केरल में मुन्नार चाय बागानों की महिला मजदूरों की निडरता मिसाल है। बिना बिचौलियों के कर्नाटक में बेंगलुरू की गारमेन्ट फैक्ट्रियों की महिला मजदूरों की हलचल से डरी केन्द्र सरकार ने पी एफ के नये नियम कैन्सल किये। होण्डा टपुकड़ा फैक्ट्री मजदूर .... सऊदी अरब में बिन लादेन समूह के वरकर..... बांग्लादेश में गारमेन्ट वरकर. ...... दिसम्बर 2015 में तमिल नाडु में प्रिकोल फैक्ट्री के 8 मजदूरों को दोहरे आजीवन कारावास की सजा दी गई और तमिल नाडु में लुकास टी वी एस फैक्ट्री में 4 से 10 जनवरी 2016 **(शेष पेज तीन पर)**

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/15-17
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।